The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-4, January-2024
www.theresearchdialogue.com

साम्प्रदायिकता : एक गंभीर चुनौती

डॉ० पंकज चौधरी,
असि० प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान,
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कॉधला
– शामली, (उ०प्र०), भारत
pankajbali21.pb@gmail.com

सार –

साम्प्रदायिकता भारत की अनेक समस्याओं में से एक किसी अन्य सम्प्रदाय से अधिक महत्व देती है। भारत में इसकी तीन प्रमुख विशिष्टताऐं पाई जाती है। भारत में साम्प्रदायिकता का विकास एक प्रक्रिया के तहत हुआ है। जिसके अनेक कारण है। देश की एकता, अखण्ड़ता, शांति, सौहार्द्र बनाए रखने के लिए इस समस्या की निवारण आवश्यक है।

भारत में अनेक चुनौतियाँ विघमान हैं। जिनमें से साम्प्रदायिकता एक प्रमुख चुनौती है। साम्प्रदायिकता का अर्थ जानने से पहले यह आवश्यक है कि हम सम्प्रदाय और साम्प्रदायिक शब्दों का अर्थ स्पष्ट रूप में समझ लें। 'सम्प्रदाय' से तात्पर्य है कि परम्परागत रूप से चली आ रही पूजा पद्वति में विश्वास रखने वाला समूह। वहीं साम्प्रदायिक से तात्पर्य है– वह व्यक्ति या समूह जो किसी सम्प्रदाय विशेष से जुड़ा है और उसके हितों का संरक्षण करता है। साम्प्रदायिकता से तात्पर्य है – एक विचार या विचारधारा जो अपने विशिष्ट सम्प्रदाय के हितों की अपने राष्ट्र या अन्य सम्प्रदाय के लोगों या अनुयायियों के प्रति घृणा या वैमनस्य के भाव विकसित करती है। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पण्ड़ित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि ''एक साम्प्रदायिकता से दूसरी साम्प्रदायिकता समाप्त नहीं होती। दोनों एक दूसरे को बढ़ावा देती हैं और दोनों ही पनपती है। ''इस प्रकार किसी धर्म अथवा धार्मिक व्यवस्था के प्रति प्रतिबद्वता स्वयं में साम्प्रदायिकता नहीं

होती वह तभी साम्प्रदायिकता का रूप धारण करती है। जब उसका दुरूप्रयोग निहित या संकीर्ण स्वार्थों के लिए किया जाता है। जब उसे किसी अन्य धार्मिक सम्प्रदायों अथवा राष्ट्र के विरूद्व प्रयोग में लाया जाता है। श्री कृष्ण भट्ट के अनुसार सम्प्रदायवाद से तात्पर्य है– 'मेरा सम्प्रदाय ,मेरा पंथ, मेरा मत ही सर्वोत्तम है। मैं जिस सम्प्रदाय में विश्वास रखता हूँ। उसी की तूती बोलनी चाहिए। मेरे सम्प्रदाय की अपेक्षा अन्य सम्प्रदाय निम्न हैं। उन्हें या तो समाप्त कर देना चाहिए। अगर उनका आस्तित्व रहता है तो वे हमारे मातहत बनकर रहें। वे आगे लिखते हैं कि 'अपने धार्मिक सम्प्रदाय से भिन्न अन्य सम्प्रदाय अथवा सम्प्रदायों के प्रति उदासीनता, उपेक्षा, दया, दृष्टि, घृणा, विरोध और आक्रमण की भावना साम्प्रदायिकता है, जिसका आधार वह वास्तविक या काल्पनिक भय अथवा आशंका है। उक्त सम्प्रदाय हमारे अपने सम्प्रदाय और संस्कृति को नष्ट कर देने या हमें जानमाल की क्षति पहुँचाने के लिए कटिबद्व है।

सामान्यतः एक सम्प्रदायवादी की दृष्टि समाज विरोधी होती है। उन्हें समाजविरोधी इसलिए कह सकते है। क्योंकि वे अपने समूह के संकीर्ण हितों को पूरा करने के लिए अन्य समूहों के साथ – साथ पूरे देश के हितों की भी अवहेलना करने से पीछे नहीं हटते। साम्प्रदायिक संगठनों की उद्देश्य शासकों के ऊपर दबाब डालकर अपने सदस्यों के लिए अधिक सत्ता प्रतिष्ठा तथा राजनीतिक अधिकार प्राप्त करना होता है।

भारतीय साम्प्रदायिकता की विशिष्टताऐं–

1. साम्प्रदाायिक राष्ट्रवाद– इस प्रकार की विचारधारा के अन्तर्गत एक ही प्रकार के समूह अथवा किसी विशेष धार्मिक समुदाय का प्रतिनिधित्व करने वाले सभी लोगों के हितों में समानता पाई जाती है। उदाहरणस्वरूप – यदि उनके हितों का धर्म से कोई वास्ता न हो तब भी वे सभी को एक समानरूप से प्रभावित करते हैं।

2 उदारवादी साम्प्रदायिकता– इस विचारधारा के अंर्तगत, बहुभाषी समाज में एक धर्म के मानने वालों के सांसारिक हित अन्य किसी भी धर्म को मानने वालों के सांसारिक हितों से अलग होते है।

3. उग्रवादी साम्प्रदायिकता– इस विचारधारा के अंतर्गत, विभिन्न धर्मों को मानने वालों के हित एक दूसरे के विरोधी होते है। इस तरह की व्यवस्था में दो अलग–अलग धर्म को मानने वाले एक साथ आस्तित्व में नहीं रह सकते क्योंकि एक समुदाय के हित दूसरे समुदाय के हितों से लगातार टकराते हैं।

भारत में साम्प्रदायिकता का विकास भी इसी प्रकार हुआ है। भारत विष्व का एकमात्र देश नहीं है जहाँ साम्प्रदायिकता पाई जाती है। बल्कि विश्व के अनेक देशों में साम्प्रदायिकता पाई जाती है। भारत में साम्प्रदायिकता उन्हीं परिस्थितियों की देन है। जिन्होंने दूसरे देशों के समाज में साम्प्रदायिकता जैसी विचारधारा और घटनाओं को बढ़ावा दिया। उदाहरणस्वरूप नस्लवाद फासीवाद और उत्तरी आयरलैण्ड़ में कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट संघर्ष। साम्प्रदायिकता एक ऐसी राजनीतिक प्रवृत्ति है जिसका विकास आधुनिक विचारधारा के रूप में हुआ है। यह आधुनिक सामाजिक वर्गों तथा शाक्तियों की सामाजिक अपेक्षाओं को व्यक्त करती है एवं उनकी राजनीतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। वर्तमान आर्थिक संरचना ने इसे न केवल इसे पैदा किया है। अपितु उसके कारण ही यह फली–फूली भी है। भारत में साम्प्रदाायिक

विचारधारा का जन्म उपनिवेशवाद की नीतियों तथा उसके विरूद्व लड़ने की आवश्यकता से उत्पन्न बदलावों की बजह से हुआ।

साम्प्रदायिकता के विकास के कारण– भारत में साम्प्रदायिकता के विकास में निम्नलिखित कारणों ने अपनी भूमिका निभाई है जो इस प्रकार है।

1. इतिहास लेखन द्वारा साम्प्रदायिकता को बढ़ावा– साम्राज्यवादी हितों को पूरा करने के लिए कुछ ब्रिटिश लेखकों ने हिन्दू–मुस्लिम प्रश्न को लेकर इतिहास और भारतीय संस्कृति के विकास की कहानी लिखी इतिहास लेखन के क्रम में प्राचीन काल को हिन्दू काल, मध्यकालीन भारतीय इतिहास को मुस्लिम काल कहा गया अर्थाथ यह दर्शाया गया कि धर्म ही इन कालों में सबसे प्रमुख तत्व था।मध्यककाल के शासकों के आपसी संघर्ष को हिन्दू–मुस्लिम संघर्ष के रूप में प्रस्तुत किया गया।

2. सामाजिक–आर्थिक कारण– भारत में भी बुर्जुआ वर्ग और व्यवसायिक वर्ग का उदय हुआ। यह उदय की प्रक्रिया हिन्दू एवं मुसलमानों दोनों ही सम्प्रदायों में लगभग समान थी। लेकिन आगे चलकर दोनों ही सम्प्रदायों में प्रतिद्विन्दिता बढ़ती चली गई। मुस्लिम बुर्जुआ वर्ग के लोगों ने हिन्दू बुर्जुआ वर्ग के लोगों के विरूद्व निम्नमध्यवर्गीय मुसलमानों को प्रोत्साहित किया। भारत के आर्थिक पिछडेपन बेरोजगारी गरीबी जैसी गंभीर समस्याओं ने अंग्रेजों को साम्प्रदायिकता को बढ़ाने तथा अलगाववादी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित करने का मजबूत अवसर प्रदान कियाा गया। अंग्रेजों ने अपने हितों को पूरा करने के लिए व्यक्तिगत गुणों पक्षपात को व्यापक आधार प्रदान कर प्रतिद्विन्दता को और अधिक बढ़ाया तथा इन सब का उपयोग साम्प्रदायिकता को बढ़ाने में किया।

3. धर्मसुधार आन्दोलनों का प्रभाव– भारत में 19 वीं शताब्दी में अनेक धर्म सुधार आन्दोलन हुए लेकिन हिन्दू और मुस्लिम धर्म सुधार आन्दोलनों के कुछ परस्पर विरोधी रूप भी थे। ये आन्दोलन हिन्दू और मुस्लिम धर्मों को रूढ़िवादी और विवेकरहित तत्वों से बचाने के लिए प्रारम्भ किए गए थे। परन्तु इनसे कुछ अप्रत्यक्ष प्रवृत्तियाँ भी पैदा हुई। बहावियों द्वारा सभी गैर मुस्लिम लोगों के प्रति जिहाद का नारा लगाया गया। यह हिन्दूओं के लिए सहन करना उतना ही कठिन था जितना कि कुछ हिन्दू सुधारकों द्वारा इस देश को 'आर्यावर्त' में परिणित करना और शुद्धि का आह्यन देना मुसलमानों के लिए।

4. सरकारी सेवाओं का साम्प्रदायिकता बढ़ाने के लिए उपयोग– व्यापार एवं उद्योग में भरपूर अवसर न मिलने के कारण सरकारी सेवा ही अच्छा जीवन–यापन का अवसर प्रदान करती थी। अंग्रेजों द्वारा इसका उपयोग हिन्दू और मुस्लिम दोनों सम्प्रदायों के आपसी द्वेष और ईर्ष्या को बढ़ाने में किया गया। भारत के राष्ट्रीय नेता इसे भली–भाँति जानते थे परन्तु वे इसमें कुछ नहीं कर सकते जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि ''इस विशाल संरक्षण का प्रयोग अंग्रेजों द्वारा भारत में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए किया गया।

5. नवीन वीर गाथाऐं और साम्प्रदायिकता– 20 वीं शताब्दी के उग्रराष्ट्रवादियों द्वारा एक तरफ जहाँ महाराणाप्रताप, शिवाजी, गुरू गोविन्द सिंह को राष्ट्रवीरों की तालिका में शामिल कर लिया गया वहीं दूसरी तरफ अकबर, शाहजहाँ, और औरंगजेब जैसे शासकों को विदेशियों की संज्ञा दी गई अर्थाथ राष्ट्रवीर हिन्दू थे वहीं ये शासक विदेशी थे क्योंकि मुसलमान थे। परन्तु यह समझने की आवश्यकता है कि आधुनिक राष्ट्रवाद

जैसी भावना की संकल्पना मध्यकाल में नहीं थी। इन सब बातों का प्रयोग अंग्रेजों द्वारा साम्प्रदायिकता को बढ़ाने में किया गया।

6. अंग्रेजों की फूट डालो राजकरो की नीति– अंग्रेजों ने भारत में षासन करने के प्रारम्भिक दौर में मुसलमानों को शक की दृष्टि से देखा था। इस शक को 1857 की क्रांति और बहावी आन्दोलन ने और बढ़ा दिया। जिसके परिणामस्वरूप अंग्रेजों ने मुसलमानों के प्रति दमन एवं भेदभाव की नीति को अपनाया। मुसलमानों द्वारा अंग्रेजी शिक्षा न अपनाने के कारण सरकारी सेवाओं में वे पिछड़ते चले गए।

1870 के बाद अंग्रेजों ने मुसलमानों को आरक्षण समर्थन देना प्रारम्भ कर दिया जिससे मुसलमानों को राश्ट्रवादियों के विरूद्व प्रयोग किया जा सके। अंग्रेजो ने सर सैय्यद अहमद खाँ जैसे नेताओं को कांग्रेस के विरूद्व उकसाया और अंग्रेजों ने हिन्दू और मुसलमानों के लिए अलग–अलग हितों की बात कही। बाद में अंग्रेजों ने हिन्दुओं के बहुसंख्यक होने की बात कही। इस प्रकार अंग्रेजों ने हिन्दू और मुसलमानों में फूट ड़ाली और शासन किया जिसके परिणामस्वरूप साम्प्रदायिकता बढ़ी।

साम्प्रदायिकता के दुश्परिणाम–

1. देशव्यापी दुष्प्रभाव– साम्प्रदाायिकता के दुष्प्रभाव केवल स्थानीय स्तर तक सीमित नहीं रहे बल्कि उसने अपनी चपेट में सम्पूर्ण भारत को लिया है। साम्प्रदायिकता ने राष्ट्रीय एकता को बाधित किया है। साम्प्रदायिकता ने विभिन्न धर्मों के लोगों को भावनात्मक रूप से जुड़ने में समस्याऐं उत्पन्न की है और हिन्दू मुसलमानों के बीच विरोधी भाव पैदा किए हैं जिसके परिणाम स्वरूप लोगों में तनाव, संघर्ष, पैदा हुए है। साथ ही राष्ट्रीय असुरक्षा की भावना पैदा की है।

2. जनधन की हानि–समय– समय पर होने वाले साम्प्रदायिक दंगो में अनेक लोगों की जानें गई है। जिससे विभिन्न धर्मों के लोगों के बीच अविश्वास तनाव वैमनस्य पूर्वाग्रह में और वृद्धि हुई है। अनेक लोगों के साथ मारपीट एवं अनैतिक व्यवहार हुए है। मकान दुकान सरकारी कार्यालय स्कूल भवन रेल में आग लगा दी जाती है। जिसके कारण अरबों रूपये की सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। और आर्थिक विकास रूक जाता है।

3. आर्थिक विकास में बाधक– साम्प्रदायिकता के परिणामस्वरूप आर्थिक विकास बाधित होता है। साम्प्रदायिकता से निर्माण कार्य ही नहीं बल्कि सेवा कार्य भी बाधित होता है। ऐसे क्षेत्र जहाँ साम्प्रदायिक तनाव बना रहता है। वहाँ पर पूँजी निवेश से बचते हैं जिससे आर्थिक विकास बाधित होता है और गरीबी बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न होती है।

4. सामाजिक एंव सांस्कृतिक विघटन– साम्प्रदायिकता के कारण सामाजिक एवं सांस्कृतिक विघटन की स्थिति पैदा होती है। विभिन्न संस्कृतियों को मानने वाले लोगों के बीच परस्पर मनमुटाव पैदा होता है। वे एक साथ समाज में रहने में असहजता महसूस करते हैं।

5. असामाजिक तत्वों में वृद्धि– साम्प्रदायिकता के दौरान असामाजिक तत्वों को अपना कार्य करने का पूर्ण मौका मिल जाता है। वे साम्प्रदायिकता के दौरान लूटपाट करने धन एकत्रित करने में सफल हो जाते है। वे व्यक्तिगत दुश्मनी का भी बदला देने में सफल हो जाते है।

6. राजनीतिक दुष्परिणाम– साम्प्रदायिकता के कारण राजनीतिक अस्थिरिता पैदा होती है। कई बार ऐसा भी देखा जाता है। कि सत्ता प्राप्त करने के लालच में देश कुछ राजनेता ही इस विष वृक्ष को खाद पानी दे रहे है। मैं अपनी इस बात को इन पंक्तियों के माध्यम से रखना चाहूँगा–

दंगो की फसल को उगाने वाले बीज यहाँ
नेता मेरे देश के विदेश से मंगा रहे।
लहरा रहे हैं पेड़ उग्रवादियों के यहाँ
हाथ ने हजारा पानी नेता ही लगा रहे हैं।
देश की अखड़ता से इनको नहीं है काम
कुर्सी के हेतु देश दॉव पर लगा रहें।
हो रहे हैं बम विस्फोट हिन्द वाटिका में यहाँ
नेता एक दूसरे पर लांछन लगा रहे।

साम्प्रदायिकता के निवारण के उपाय– साम्प्रदायिकता एक ऐसा अभिशाप है जिसका निवारण अत्यधिक आवश्यक है। इसके लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते है।

1. सामाजिक रूढ़िवादिता को समाप्त करने के प्रयास किए जाऐं।
2. शिक्षा में वैज्ञानिक और नैतिक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाए।
3. धर्मान्ध लोगों पर अंकुश लगाया जाए।
4. धर्मनिरपेक्षता के मूल्यों को बढ़ावा दिया जाए।
5. प्रषासनिक व्यवस्था को सुदृढ़ किया जाए।
6. साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देने वाले नेताओं पर प्रतिबंध लगाया जाए।
7. समाचार पत्र न्यूज चैनलों द्वारा भड़काऊ धार्मिक भाषणों पर प्रतिबंध लगाना चाहिए।
8. किसी भी सार्वजनिक क्षेत्र में बहुमत के आधार पर कोई प्रवृत्ति पैदा नहीं करनी चाहिए।

अतः प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति में अपने कर्तव्यों का निर्वहन करें। सभी राजनेताओं, बुद्धिजीवियों, नागरिक समाज सभी को साम्प्रदायिकता जैसी बुराई को समाप्त करके सामाजिक और राष्ट्रीय सद्भावना बनानी चाहिए। जिससे देश निर्माण में सभी लोग अपनी भूमिका निभाऐं और भारत देश एक नई ऊँचाई प्राप्त कर सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वर्मा,एस.पी. : राजनीति के सिद्धान्त।
2. जैन,पुखराज : राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त।
3. सिद्दकी, एच : राजनीति के तत्व।
4. कोठारी, रजनी : साम्प्रदायिकता और भारतीय राजनीति।
5. श्रीवास्तव, ए.एल. : साम्प्रदायिकता निंबध।

6. शुक्ल, आर.एल. : आधुनिक भारत का इतिहास।
7. ग्रोवर, बी.एल. मेहता अलका, यशपाल : आधुनिक भारत का इतिहास।

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-4, January-2024
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number January-2024/27
Impact Factor (IIJIF-1.561)
https://doi-ds.org/doilink/01.2023-11922556

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ० पंकज चौधरी

for publication of research paper title

"साम्प्रदायिकता : एक गंभीर चुनौती"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed or Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-02, Issue-04, Month January, Year-2024.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY